॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-६

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रील भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराजका वाणी-वैभव

श्रीगौड़ीय-पत्रिकाका सत्ताईसवाँ वर्ष

मङ्गलाचरणके माध्यमसे आश्रय एवं विषय-विग्रहकी वन्दना

श्रीगौड़ीय वेदान्त समितिकी मुख-पत्रिका "श्रीगौड़ीय पत्रिका"ने गौड़-पूर्णानन्द श्रीमध्वाचार्य द्वारा परिसेवित श्रीबालगोपालजीको अपने वक्षस्थल[मुख्यपृष्ठ]पर धारण करते हुए शुभ सत्ताईसवें वर्षमें पदार्पण किया है। रूपानुग गौड़ीय-वैष्णवगण—ब्रह्म-माध्व-गौड़ीय सम्प्रदायके अन्तर्गत हैं, इसी कारण गौड़ीय-वेदान्ताचार्य श्रीबलदेव विद्याभूषण प्रभुने चार वैष्णव-सम्प्रदायोंमें प्रमुख ब्रह्म-सम्प्रदायके आचार्य श्रीआनन्दतीर्थ मध्वमुनिकी इस प्रकार वन्दना की है—"आनन्दतीर्थ-नामा सुखमयधामा यतिर्जीयात्।" [अर्थात् अनन्त सुखके धामस्वरूप श्रीआनन्दतीर्थ नामक संन्यासीप्रवर जययुक्त हों।] विशेष आनन्दका विषय यह है कि श्रीमध्वाचार्यपादने भी दधिमन्थनके दण्ड एवं सूत्रको धारण किए हुए श्रीनर्त्तन-गोपालके उद्देश्यसे जिस स्तवगुच्छकी रचना की है, उस "श्रीमद्द्वादशस्तोत्रम्" (संक्षिप्तसारम्) के द्वारा ही श्रीपत्रिकाके नववर्षका मङ्गलाचरण एवं शुभारम्भ किया गया है। हम भी वर्षके आरम्भमें वेद एवं वेदशास्त्रोंके अनुगत गुरुवर्गके आनुगत्यमें हनुमान एवं भीमके

अवतार श्रीपूर्णप्रज्ञ यतिराज और उनके परम-उपास्य श्रीबालगोपालदेवकी स्तुति एवं जयगान द्वारा निज वक्तव्यकी सूचना कर रहे हैं—

"प्रधारा मध्वो अग्रियो महीरपो विगाहते।
हविर्हविषु वन्द्यः।
अस्मभ्यमिन्द विन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया।
पर्जन्यो वृष्टिमान् इव॥"

(ऋग्वेद ९/७/२,९)

[बद्रीनाथ गमन करनेमें अग्रणी, श्रीवेदव्यास द्वारा बुलाये गये, समस्त शिष्योंमें परम-वन्दनीय अर्थात् सर्वश्रेष्ठ गुरुके रूपमें पूजित श्रीमन्मध्वाचार्य जलप्रवाह-विशिष्ट महान गङ्गा आदि ज्ञानरूपी नदियोंकी धारामें अवगाहन करते हैं। हे सर्वाभीष्ट-प्रदानकारीजनोंमें प्रमुख, वायुके अवतार! आप परम-ऐश्वर्यपूर्ण श्रीविष्णुका उनके निजगणोंसे मिलन करा देते हैं अर्थात् उनमें सम्बन्ध-ज्ञान उदित करा देते हैं। आपका नाम है—श्रीमध्व। वर्षा करनेवाले मेघकी भाँति आप हमारे प्रति ज्ञानधाराका वर्षण करते हुए उसका सर्वत्र वितरण करें तथा हमें पवित्र करें।]

देवकिनन्दन नन्दकुमार वृन्दावनान्दन गोकुलचन्द्र।
कन्दफलाशन सुन्दररूप नन्दितगोकुल वन्दितपाद॥
दामोदर दूरतरान्तर वन्दे दारित-पारग-पार परस्मात्॥

(द्वादशस्तोत्रम् ६/५, ५/८)

[हे वृन्दावन-विहारी! गोकुलके आनन्द! पूजितचरण! कन्दफलभोजी! सुन्दरमूर्त्ति! गोकुलचन्द्र! नन्दकुमार! देवकि (यशोदा)-नन्दन! हे दामोदर! हे असज्जनदुर्लभ! हे भवसागर-पारगामी-मुक्तपुरुषोंके आश्रय! मैं आपकी वन्दना करता हूँ।]

श्रीमन्मध्वाचार्यका आविर्भाव स्थान

यहाँ श्रीमद् आनन्दतीर्थपादके आविर्भाव स्थान—उडुपी-क्षेत्रके सम्बन्धमें कुछ चर्चा करना निश्चित रूपसे अप्रासङ्गिक नहीं होगा। भारतके दक्षिण-पश्चिम भागमें गोकर्णक्षेत्रसे लेकर कन्याकुमारी तक अतिविशाल पर्वतश्रेणी विद्यमान है जो 'सह्याद्रि', 'मलयगिरि', 'कोलपर्वत' आदि नामोंसे प्रसिद्ध है। यही पवित्र भूभाग 'परशुराम क्षेत्र' के रूपमें परिचित है। यह आदि-केरल, मध्य-केरल एवं अन्त-केरल—इन तीन भागोंमें विभाजित है। इनमेंसे आदि-केरल उत्तर-कर्नाटक एवं दक्षिण-कर्नाटक नामक दो प्रदेशोंमें विभिक्त है। दक्षिण-कर्नाटक प्रदेशमें 'रजतपीठपुर' है तथा इसका अन्य प्राचीन नाम 'उडुपीक्षेत्र' है। श्रीमध्वाचार्य उडुपीसे संलग्न पाजकाक्षेत्रमें आविभूर्त हुए थे।

उडुपी नामकी सार्थकता तथा उडुप-चन्द्रसे शिक्षा

श्रीपत्रिकाके सत्ताईसवें वर्षमें प्रवेश करनेसे उडुपी-क्षेत्रके साथ अश्विनी, रोहिणी, कृत्तिका आदि सत्ताईस तारामण्डलों (नक्षत्रों) का विषय स्मृतिपटलपर जागृत होता है। ये सभी चन्द्रकी पत्नियाँ हैं। 'उडु' अर्थात् नक्षत्र एवं 'प' अर्थात पति, अतः उडुप अर्थात् नक्षत्रपति चन्द्र। चन्द्रकी तपस्यासे प्रसन्न रुद्र-देवताके अधिष्ठान-क्षेत्रके रूपमें यह स्थान 'उडुपी' नामसे प्रसिद्ध है। पुराणमें वर्णन हुआ है—चन्द्रकी सत्ताईस पत्नियाँ सभी दक्ष-कन्याएँ हैं। चन्द्र केवलमात्र रोहिणीके प्रति ही

अत्यधिक आसक्त थे, इस कारण दक्षने चन्द्रको यह अभिशाप दिया कि 'चन्द्र कलाहीन हो जाएगा'। तब कलाक्षयके निवारणके लिए चन्द्रने अब्जारण्यमें तपस्याकर चन्द्रमौलीश्वर श्रीरुद्रदेवको संतुष्ट किया। श्रीरुद्रने चन्द्रको यह आर्शीवाद प्रदान किया कि एक पक्षमें चन्द्रकी कला क्षीण होगी तथा अन्य पक्षमें कला वर्धित होगी। उसी समयसे कृष्ण एवं शुक्ल पक्षका प्रचलन हुआ है। अलक्ष्यवेगयुक्त कालके प्रभावसे जिस प्रकार चन्द्रकी कलाएँ ही क्षीण एवं वर्धित होती हैं, परन्तु मूल चन्द्र कभी क्षीण अथवा वर्धित नहीं होता; उसी प्रकार जन्मसे लेकर मृत्यु तक केवल इस देहके ही विकार लक्षित होते हैं, शुद्ध आत्माकी किसी प्रकारसे कोई विकृति नहीं होती। सूर्यकी किरणोंके द्वारा ही प्रकाशित चन्द्रकी कलाएँ क्षीण अथवा वर्धित होती हैं; उसी प्रकार भगवत्-उन्मुख एवं भगवत्-विमुख होनेकी योग्यता जीवमें विद्यमान है, हम उडुप(नक्षत्रपति) चन्द्रसे यही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

गीता-भागवत-उपनिषदोंमें चन्द्र-सूर्यादि श्रीभगवान्‌की विभूतिके रूपमें वर्णित

"एकश्चन्द्रः तमो हन्ति न च तारागणैरपि" [अर्थात् एक चन्द्रसे ही अन्धकार नष्ट हो जाता है, तारोंके समूह द्वारा वह सम्भवपर नहीं।] इस वाक्यके द्वारा तारोंकी अपेक्षा चन्द्रकी प्रधानता(श्रेष्ठता) स्थापित हुई है। किन्तु श्रीगीतामें भगवान् कहते हैं—

"रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशि सूर्ययोः"

(गीता ७/८)

"आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्—
—नक्षत्राणामहं शशी॥"

(गीता १०/२१)

"न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।"

(गीता १५/६)

अर्थात् हे कौन्तेय! जलमें विद्यमान रस तथा सूर्य एवं चन्द्रमें विद्यमान ज्योति मैं ही हूँ। मैं द्वादश आदित्योंमें विष्णु नामक आदित्य, प्रकाश देनेवालोंमें महाकिरणशाली सूर्य तथा नक्षत्रोंमें चन्द्र हूँ। मेरे सर्वप्रकाशक धामको सूर्य भी प्रकाशित नहीं कर सकता, चन्द्र तथा अग्नि भी नहीं।

श्रीमद्भागवतमें कहा गया हैं—

"सोमं नक्षत्रौषधीनां धनेशं यक्षरक्षसाम्"

(श्रीमद्भा. ११/१६/१६)

"तपतां द्युमतां सूर्यं मनुष्या च भूपतिम्"

(श्रीमद्भा. ११/१६/१७)

"अपां रसश्च परमस्तेजिष्टानां विभावसुः।
प्रभा सूर्येन्दु-ताराणां शब्दोऽहं नभसः परः॥"

(श्रीमद्भा. ११/१६/३४)

अर्थात् हे उद्धव! मैं नक्षत्रों एवं औषधियोंमें उनका स्वामी चन्द्र हूँ, यक्ष एवं राक्षसोंमें उनका अधिपति कुबेर-स्वरूप हूँ। ताप एवं प्रकाश प्रदान करनेवालोंमें मैं सूर्य हूँ तथा मनुष्योंमें मैं राजा हूँ। मैं जलमें मधुररस हूँ, तेजस्वीगणोंमें सूर्य हूँ, चन्द्र एवं तारोंकी ज्योति हूँ तथा आकाशमें शब्द-स्वरूप हूँ।

उपनिषदों में कहा गया है—

"न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र-तारकं,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं,
तस्य तासा सर्वमिदं विभाति॥"

(कठ, मुण्डक, श्वेताश्वर)

अर्थात् उस स्वतः प्रकाशित परब्रह्मको सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र तथा समस्त विद्युत भी प्रकाशमान नहीं कर सकते, अग्निका तो फिर कहना ही क्या? किन्तु उसका अनुसरण करके सूर्य, चन्द्रादि सभी दीप्तिमान होते हैं, उन (परब्रह्म)की अङ्गकान्तिसे ही समस्त जगत् ज्योतिर्मय होता है।

(श्रीगौड़ीय पत्रिका, वर्ष-२७, संख्या-१से अनुदित)

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति - श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली